International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 78-79

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 78-79
www.allresearchjournal.com
Received: 11-04-2017
Accepted: 12-05-2017

Rashmi Meena
Department of Political Science, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

Correspondence
Rashmi Meena
Department of Political Science, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा : वर्तमान समय की समस्याओं की प्रांसगिकता / आवश्यकता

Rashmi Meena

प्रस्तावना

लोकतांत्रिक व्यवस्था को 'सकल राष्ट्रीय सुख' की राष्ट्रीय सोच के साथ जोड़कर विश्लेषण करने का प्रयास है। सकल राष्ट्रीय सुख की सोच को आम जनता में न केवल लोकप्रिय बनाने अपितु उस सोच को अमल में लाने के लिये प्रयत्नशील है। यद्यपि उक्त सोच में दार्शनिकता है। विचित्रता है। तथा आंशिक दृष्टि से काल्पनिकता भी है। एक आदर्श सोच को मानव समुदाय के बीच किस तरीके से मापा जाये जिससे आम जनता बड़ी खुशी से उसे ग्रहण करे और अपने जीवन में ढाले। यही नहीं लोकतंत्र के सामने कुछ अन्य चुनौतियाँ पहले से ही विद्यमान है या भविष्य में उत्पन्न होने की संभावना है। कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार की है। जैसे– भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, पर्यावरण, आधुनिकीकरण, सामाजिक परिवर्तन, आम जनता में धर्म व मूल्यों के प्रति प्रतिकूल दृष्टिकोण, भोगवाद आदि पर आसानी से विजय प्राप्त करना सरल नहीं होगा। प्रशासकों का ऐसा अनुमान है कि ''यदि सकल राष्ट्रीय सुख' के सोच को आम जनता तक पहुँचा दे और उन्हें इस सोच पर पूर्ण आस्था व भरोसा हो जाये तभी उक्त चुनौतियों पर विजय आसान हो जायेगी। सकल राष्ट्रीय सुख की सोच को लोकतांत्रिक व्यवस्था के साथ जोड़ना तभी प्रासंगिक होगा। जब इस अवधारणा की सही तरीके से व्यवस्था हो तथा स्पष्टीकरण भी।

'सकल राष्ट्रीय सुख' की पृष्ठभूमि :– सकल राष्ट्रीय सुख की अवधारणा का जन्म भी भूटान की शाही सरकार ने प्रतिपादित किया जिसकी उम्र अभी 14–15 वर्ष ही है। अवधारणा का जन्म तो अभी हुआ है। परन्तु भूटान में व्यावहारिक स्वरूप न जाने कितने वर्षों से अमल में लाया जा चुका था। भूटान सरकार ने 1999 में 'सकल' राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा पर लेखों का संकलन प्रकाशित किया 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा पर पहली बार अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 1 जनवरी 2001 में नीदरलैण्ड के जीस्ट स्थान पर आयोजित की गई संगोष्ठी का मुख्य विषय 'सकल राष्ट्रीय सुख' के दर्शन व अवधारणा तत्पश्चात् 18–20 फरवरी 2004 को भूटान शाही सरकार ने इसी अवधारणा पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की थी इस संगोष्ठी में लगभग 82 विद्वानों ने भाग लिया और ये विद्वान 18 देशों से आये थे। लगभग 1400 लोग एशिया, यूरोप तथा उत्तरी–दक्षिणी अमेरिका से पधारे थे। उसके पश्चात् 20–24 जून 2005 को कनाडा में आयोजित की गई इस संगोष्ठी में विशेष बात यह थी कि विद्वानों ने न केवल 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा की विस्तार से व्याख्या की अपितु यह भी माना कि उक्त अवधारणा संकीर्ण दायरे से निकलकर व्यापकता तथा यथार्थ के दायरे में प्रवेश हो चुकी है। जिसके परिणामस्वरूप पाश्चात्य देशों में भी इसकी लोकप्रियता तथा ग्राहयता की झलक मिल रही है।

सकल राष्ट्रीय सुख :– वर्तमान समय की समस्याओं की प्रांसगिकता

भूटान का यह राष्ट्रीय दर्शन अन्य विकासशील देशों से पूर्णतया भिन्न है। परंतु अंतर्राष्ट्रीय समुदाय यदि भूटान का आंशिक भी अनुकरण करे तो संभवतः अन्तर्राष्ट्रीय तनाव व युद्धों से बच पाना संभव हो जायेगा।

अतः 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा का भूमण्डलीकरण करने की आवश्यकता है।

–प्राकृतिक संसाधन जिन पर किसी भी देश का आर्थिक विकास निर्भर है। वर्तमान में भौतिकवादी जीवन शैली ने इन संसाधनों का अति दोहन किया और वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व में प्रदूषण की समस्या गंभीर रूप से उत्पन्न हुई है। इस समस्या के दो कारण जो प्रमुख हैं।

1. जनसंख्या की वृद्धि
2. प्रकृति के संसाधनों का प्रति व्यक्ति उपभोग का बढ़ना

इन दो समस्याओं के निराकरण में 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा एक व्यावहारिक मूलमंत्र है। जो स्पष्ट करती है कि लौकिक सुख की प्राप्ति भौतिक सुखों के भोग में नहीं है। अपितु आध्यात्मिक मूल्यों के अनुसरण करने में है। दूसरे शब्दों में मानव अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को इतना सीमित कर ले जिससे मानवीय व्यवहार की व्यवस्था में अस्तव्यस्तता नजर नहीं आये और मानव भौतिक सुख के प्रवाह में सिर्फ अपनी ओर ही ध्यान न दे अपितु राष्ट्रीय व समाज के मूल्यों को ध्यान में रखकर बुनियादी इच्छाओं की पूर्ति करे। वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति के आधार पर निष्कर्ष यही निकला है कि मानव का सुख और खुशी स्वयं

की इच्छा पूर्ति में नहीं है। अतः नैतिक मूल्यों, विचाराधारा, आस्था तथा संस्थाओं को यदि अधिक बढ़ावा मिले तो वहनीय विकास का जन्म हो सकता है। और उसके साथ जनता की जीवन शैली में भी गुणात्मक पक्ष की अभिवृद्धि हो सकती है।

– आज विश्व विकसित तथा विकासशील देशों के बीच दो भागों में विभाजित है। वर्षों से विकसित देशों ने विकासशील देशों की मजबूरियों या बाध्यताओं का सुनियोजित दुरूपयोग किया है, और भूमण्डलीकरण के आवरण में अभी भी गरीब देशों का शोषण करने की योजना उनके सामने है। परंतु भूटान के द्वारा प्रतिपादित गंभीर सोच ने विकसित देशों को प्रभावित किया है। 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा एक ऐसी सोच है। जिसने पाश्चात्य देशों को प्रभावित किया और इन देशों ने इस अवधारणा को संघर्ष ग्रहण तो किया है। लेकिन उनके समाज में परिवर्तन लाने के लिये भारी प्रयत्न करने होंगे।

यह सही है कि आधुनिक तकनीक ने मानव को सुखवाद एवं भोगवाद की दिशा में धकेला है। जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्र की संस्कृति व चरित्र पर कुप्रभाव पड़ रहा है। सबसे बड़ी समस्या जो देश व समाज से जुडी है। जिसमें राष्ट्रीय चरित्र का पतन उत्तरोत्तर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। मानव के पारस्परिक संबंध सिर्फ अर्थ से जुड़ गये हैं। भावनात्मक व सांस्कृतिक संबंधों का निरंतर लोप हो रहा है। हिंसा व आंतकवाद अपनी चरम सीमा पर है। दया सहानुभूति व करूणा का भाव धीरे–धीरे समाप्त सा होता दिखाई दे रहा है। परिवार जिसे एक पवित्र संस्था के रूप में देखा जाता था, वह बराबर टूट रही है। इन सबके पीछे धन की लिप्सा अपने श्रम से अर्जित किये गये धन से असंतोष, रातों–रात धनवान होने की ललक आदि ऐसी बुराईया हैं। जिन्होंने राष्ट्र और समाज को खोंखला कर दिया है। उक्त बुराईयों से मुक्त होने का रास्ता भूटान ने 'सकल राष्ट्रीय सुख' की अवधारणा के माध्यम से सुझाया है। राष्ट्रीय विकास की प्रक्रिया कुछ ऐसी पद्धति से हो जिससे मानव, परिवार, समाज, संस्थाएँ तथा देश समग्र सुख की दिशा में आगे बढ़े।

संदर्भ सूची

1. आर.सी. मिश्रा – भूटान इन साउथ एशिया (आविष्कार प्रकाशन, जयपुर 1996)
2. रमाकांत, आर.सी. मिश्रा – भूटान सोसाइटी एण्ड पोलिटी (संपादक) इन्डस पब्लिकेशन, नई दिल्ली (1996)
3. संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद – विजिट टू भूटान (यूनाईटेड नेशंस इकोनोमिक एण्ड सोशल कौसिंल्स – 16 दिसम्बर 1994)
4. यूनाईटेड नेशंस डवलपमेंट प्रोग्राम (UNDP) – ह्यूमन डवलपमेंट रिपोर्ट – 1993 (न्यूयार्क UNDP 1993)
5. विश्व बैंक भूटान – डवलपमेंट इन ए हिमालयन किंगडम (वाशिंगटन डी.सी. – विश्व बैंक, 1983)
6. भूटान राष्ट्रीय संसद की अधिवेशन रिपोर्ट – (शाही सरकार द्वारा प्रकाशित, 1993 – 2006)
7. शाही भूटान–सरकार–योजना–आयोग – 7वीं पंचवर्षीय योजना, सन् 1992–1997 अंक प्रथम मुख्य योजना दस्तावेज (थिम्फू योजना आयोग, दिसम्बर 1991)